सारांश

दलित इंडियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (डिक्की) एक उद्योगिक संगठन है। यह दलित उद्यमियों का संगठन है, जो उद्योग करते है। यह संगठन दलित वर्ग को उद्योग से जोड़ने के लिए भी काम करती है। यह दलित वर्ग में उद्योग के प्रति चेतना पैदा कर रही है। यह दलित वर्ग से ज्यादा से ज्यादा उद्यमी बनाना चाहती है जिस से उनका आर्थिक सशक्तिकरण हो। दलित वर्ग आज तक नौकरियों में रहा है, जिस के वजह से उनका चौतरफा विकास देखने को मिला है, पर कम होती नौकरियाँ, निजीकरण का प्रभाव तथा श्रम से कम वेतन के चलते दलित वर्ग का विकास रुखसा गया था। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए डिक्की ने दलित वर्ग के लिए उद्योग के क्षेत्र में अवसर पैदा करने का काम किया है। दलित वर्ग जहा नौकरी से ही खुश था और नौकरी के पीछे ही भागता रहता था, ऐसे वर्ग में डिक्की ने उद्योग के प्रति चेतना पैदा की जिस के दलित वर्ग ने भी उद्योग के क्षेत्र में अवसर तलाश करने लगे। डिक्की के इस पहल से दलित वर्ग ने उद्योग के क्षेत्र में भी अपने पैर जमा लिए है।

यह शोध डिक्की की उस भूमिका पर केंद्रित है, जो वह दलित वर्ग को आर्थिक रूप से मजबूत करने में निभा रही है। शोध के दौरान यह समझ में आया है की दलित वर्ग ने उद्योग से कभी नाता जोड़ा ही नहीं था। भले ही दलित वर्ग कई सारी बातों को कुशलता के साथ करना जनता है फिर भी वह उस से आर्थिक रूप से मजबूती पाने में कमजोर रहा। इस वजह से दलित वर्ग का आर्थिक पक्ष हमेशा कमजोर ही रहा। 2005 में डिक्की के स्थापना के बाद से ही दलित वर्ग के उद्यमियों की जानकारी आम होने लगी है। जो दलित वर्ग के उद्यमी आज तक छुपे हुए थे डिक्की के स्थापना के बाद सामने आने लगे जिस से दलित वर्ग में उद्योग के प्रति सकारात्मक माहोल तैयार होता चला गया। यह उद्यमी दलित वर्ग के लिए आदर्श और प्रेरणा का काम करने लगे, जिस से ज्यादा से ज्यादा दलित वर्ग के लोग उद्योग करने के लिए आगे आने लगे। दलित वर्ग को नौकरियों से हट कर भी आर्थिक विकास का दृष्टिकोण देने की बहुत जरूरत थी, यह काम डिक्की ने किया है। डिक्की अपने विविध कार्यक्रम और सेमिनार के माध्यम से दलित वर्ग में उद्योगिक जरुकता लाई है और दलित वर्ग में उद्योगिक क्षमता स्थापित की है। डिक्की ने सरकार से बात कर दलित वर्ग के लिए कई सारी उद्योगिक नीतियाँ लाई है जिसका फायदा दलित वर्ग लेकर अपना व्यवसाय सुरू कर सकते है। योजनाएँ जैसे, कम ब्याज दर पर लोन, सरकार द्वारा उद्योगिक भूमि मोहिया करना, मार्केट प्रदान करना जिस से उत्पादित वस्तुओं को ग्राहक मिल पाये, आदि। सरकार की विभिन्न संस्थाओं के साथ मिल कर डिक्की दलित वर्ग को उद्योग में लाना चाहती है

साथ ही उनको राष्ट्रीय एंव अंतरराष्ट्रीय स्तर प्रदान करने के कोशिश में है। डिक्की हर वर्ष उद्योग मेलों का आयोजन करती है जिसमें देश भर के दलित वर्ग के उद्यमी अपने उद्योग से जुड़ी वस्तुओं का स्टॉल लगाते है जिस से उनके उत्पादित वस्तुओं को देश विदेश में पहचान मिलते है।

डिक्की दलित वर्ग को उद्योगिक दृष्टिकोण देता है साथ ही उद्योग करने के इच्छुक लोगों को जो दलित वर्ग से आते है उन्हे उद्योग स्थापना करने में भी मदद करता है। डिक्की दलित वर्ग के लिए उद्योग के क्षेत्र में अभिभावक की ज़िम्मेदारी निभाती है। सरकार की जटिल उद्योगिक नीतियों को डिक्की दलित वर्ग के सामने आसान शब्दों में रखता है, जिस से दलित वर्ग के लिए उद्योगिक नीतियों को समझ कर काम करने में बड़ी मदद मिलती है। डिक्की नौकरियों से हट कर भी आर्थिक मजबूती लाई जा सकती है यह सोच दलित वर्ग को देने में कामियाब हुई है, इसके फलस्वरूप दलित वर्ग बड़ी संख्या में उद्योग में शामिल हो रहे है।

यह शोध डिक्की द्वारा दलित वर्ग को आर्थिक रूप से किस तरह मजबूत करने के कार्य कर रही है उस पर केंद्रित है। इस शोध को सात अध्यय में विभाजित किया गया है जिसकी जानकारी कुछ इस प्रकार है।

प्रथम अध्याय

इस अध्याय में शोध से जुड़ी महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान दिया है, इस अध्याय में शोध की प्रस्तावना, शोध क्षेत्र, शोध विषय, शोध प्रविधि आदि बाते रहेगी। शोध संबंधी ज्यादतर जानकारी इसी अध्याय से प्राप्त होगी।

द्वितीय अध्याय

यह शोध का द्वितीय अध्याय है। किसी भी शोध में क्षेत्र (नागपूर) को काफी महत्व दिया जाता है, क्योंकि क्षेत्र कार्य के लिए क्षेत्र की समझ होना बहुत जरूरी है। बिना क्षेत्र की जानकारी के क्षेत्र कार्य करना असंभव है। इसी लिए यह अध्याय पूर्ण रूप से शोध क्षेत्र पर आधारित है और क्षेत्र में रहने वाले दलित वर्ग पर केंद्रित है। इस अध्याय में क्षेत्र की विषताए और महत्व को समझने की कोशिश करेगे साथ दलित वर्ग के लिए किस तरह के उद्योगिक अवसर इस क्षेत्र में है और हो सकते इस पर चर्चा भी की गई है। क्षेत्र में दो बड़े उद्योगिक क्षेत्र है, जिसे एमआईडीसी (महाराष्ट्र इंडस्ट्रियल डेव्लपमेंट कोपरेशन) कहते है, साथ ही कुछ छोटे बड़े उद्योगिक क्षेत्र नागपूर के अगल

बगल में है, जिसमे देश विदेश की नामी गिरामी कंपनीय स्थापित है। जिस से नागपूर का उद्योगिक महत्व बड़ जाता है।

तृतीय अध्याय

यह अध्याय डिक्की (दलित इंडियन चम्मबर ऑफ कॉमर्स अँड इंडस्ट्री) के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करता है । इस अध्याय में डिक्की की स्थापना, स्थापना की अवश्यकता, कार्यप्रणाली, नीतियाँ, मिशन, लक्ष्य आदि बात के चर्चा की गई है। यह संस्था पूर्ण रूप से SC और ST वर्गों में आने वाले उद्योमियों के लिए काम करती है, साथ ही जो कोई SC और ST उद्योग करना चाहता है उसे औद्योगिक मदद और मार्गदर्शन प्रदान करता है।

चतुर्थ अध्याय

यह अध्याय शोध का महत्वपूर्ण अध्याय है, यह अध्याय सरकार, सरकारी नीतीय और दलित वर्ग पर केंद्रित है । इस अध्याय में सरकारी नीतीया जो दलितों के लिए बनाई गई है साथ ही उन नीतियों के वजह से दलित वर्ग को किस तरह के फायदे और नुकसान हो रहे है उस पर प्रकाश डालने का काम किया गया है। दलित वर्ग के लोगो की पहली पीढ़ी है जो उद्योग के क्षेत्र में प्रवेश लेकर उद्योग कर रही है। पहली पीढ़ी को हमेशा ही कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। दलित वर्ग के उद्यमियों के साथ भी यह समस्या है पहली पीढ़ी होने के वजह से उनको उद्योग के क्षेत्र में काफी मेहनत करनी पड़ रही है जो की वह कर रहे है, पर अर्थ सीमित होने के वजह से उनको कई बार दिक्कत होती है इसलिए डिक्की सरकार के सामने दलित वर्ग से आने वाले उद्यमियों के लिए विशेष नीतीया बनाने का सुझाव देती है जिस से उन नीतियों के साहारे दलित वर्ग के उद्यमी उद्योग कर सके। इस अध्याय में इस तरह की नीतियों को समझने का प्रयास किया गया है।

पंचम अध्याय

यह अध्याय दलितों की स्थिति, कार्य और वर्तमान स्थिति आदि पर केन्द्रित है। भारत में दलित शब्द का अर्थ अधिकंश लेखक नकारात्मक रूप से लेखते है, वही कई ऐसे भी चिंतक और बुद्धजीवी समुदाय है जो दलित पहचान को सकरत्मक रूप में समाज केसामने रखते है, जिसमें प्रो. एल. कारुण्यकरा, चंद्रभान प्रसाद, काँचा इलाइयाह आदि शामिल है । दलितों का सुरुवाती इतिहास ब्राह्मणों द्वारा लिखा गया था, यह इतिहास ब्राह्मण दृष्टिकोण से लिखे जाने के वजह से दलित पहचान को नकारात्मक रूप से समाज के सामने रखा गया था। ब्रिटिश शासन से भारत को

आजादी मिलने के बाद दलित शब्द को समुदाय की पहचान मिली, पर कई लेखकों ने दलित को समुदाय की पहचान मनाने से इंकार कर दिया और दलित पहचान को परिस्थिति के रूप में देखने लगे। जैसे, जो व्यक्ति पैसे वाला है वो अमीर, जो व्यक्ति निर्धन हो वो गरीब, उसी तरह जो व्यक्ति दलिद्रता में रह रहा है वो दलित। दलित पहचान को परिस्थिति के रूप में देखना और दलिद्रता का समानार्थी शब्द बनाना गलत है, क्योंकि अगर कोई ब्राह्मण दलिद्रता में रह रहा है तो क्या उसे दलित माना जाएगा ? अगर जवाब हाँ है तो फिर ठीक है, पर अगर जवाब नहीं है तो इसे दलितों को सकारात्मक पहचान नहीं मिल पाये इसकी साजिश समझी जाएगी।

छठा अध्याय

दलित वर्ग ने अपने आप को उद्योग के क्षेत्र से दूर रखा है, उसके चलते उद्योग से जुड़ी जितनी भी सुविधा या उद्योग को समर्पित संस्थाये है उसकी जानकारी दलित वर्गको कम है। उद्योग से जुड़ी सरकारी नीतियाँ को जाने बिना दलित वर्ग के लिए उद्योग करना परेशानी खड़ी करता है। इसलिए दलित वर्ग के लिए कोई ऐसी संस्था की जरूरत थी जो दलित वर्ग में औद्योगिक क्रांति लाने का काम करे। यह काम डिक्की ने किया है। यह अध्याय डिक्की के रचनात्मक कार्यों पर केंद्रित है। इस अध्याय में डिक्की दलित वर्गों को उद्योग के क्षेत्र में किस तरह से लाने का कार्य कर रही है यह जानकारी देने का काम किया गया है, साथ ही दलित वर्गों के लिए डिक्की और उनके प्रतिनिधि अपनी क्या जिम्मेदार समझते है इस बारे में चर्चा की है। डिक्की और दलित वर्ग के उद्यमी के बीच के तालमेल तथा डिक्की से दलित वर्ग को हो रहे फ़ायदों पर भी यह अध्याय प्रकाश डालने का काम किया है। इस अध्याय के भागों में डिक्की और उस के कामों पर केंद्रित है, साथ ही डिक्की के मार्गदर्शन, मदद और नेतृत्व पर किए गए अध्ययन को दिखाने का प्रयत्न किया गया है। डिक्की के पदाधिकारी और डिक्की के लाभार्थी से हुई बातचित का भी ब्योरा भी इस अध्याय के भागों में दिया गया है।

सातवाँ अध्याय

यह शोध का अंतिम अध्याय है। इस अध्याय में शोध संबंधी निष्कर्ष और विश्लेषण को लिखा गया है। शोध के दौरान लिए गए छाया चित्र का कोई भी इस अध्याय में डाला गया है, जिस से शोध की मौलिकता दर्शाने में सहायता मिलती है। निष्कर्ष में शोध परिकल्पना प्रस्थापित हुई है या नहीं हुई है यह भी दिखाया गया है। विश्लेषण में, डिक्की के कार्य को समझ कर तथ्यों और प्राप्त जानकारी का वैज्ञानिक रूप में विश्लेषण किया गया है।